बुद्धवर्ष 2551, भाद्रपद पूर्णिमा, 26 सितंबर, 2007 वर्ष 37 अंक 3

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

For Patrika in various languages, visit: **www.vri.dhamma.org/newsletters**

धम्मवाणी

सुखा मत्तेय्यता लोके, अथो पेत्तेय्यता सुखा।
सुखा सामञ्ञता लोके, अथो ब्रह्मञ्ञता सुखा॥

धम्मपद-३३२, नागवग्गो

लोक में माता की सेवा करना सुखकर है, (और) ऐसे ही पिता की सेवा करना (भी) सुखकर है। लोक में श्रमण की सेवा (आदर) करना सुखकर है, और (ऐसे ही) ब्राह्मण (निर्वाण प्राप्त अर्हत) की सेवा (आदर) करना सुखकर है।

कृतज्ञ संबुद्ध

बोधिमंड के शांत वातावरण में सात सप्ताह तक विमुक्ति-सुख का रसपान कर लेने और फिर बर्मी भोजन कर लेने के पश्चात सम्यक संबुद्ध के मन में कुछ समय के लिए धर्मप्रसार के बारे में थोड़ी झिझक पैदा हुई। धर्म की यह साधना इतनी गंभीर है कि सांसारिक लोग जब इसे समझ ही नहीं पायेंगे तब मेरी मेहनत निष्फल होगी। लेकिन फिर देखा कि संसार में ऐसे भी कुछ लोग हैं जिनकी आंखों पर अविद्या की धूल के हल्के-से परदे पड़े हैं। वे अवश्य इसका लाभ लेंगे।

तब सोचने लगे कि धर्म प्रशिक्षण किनसे आरंभ करूं? उसी समय श्रमण आचार्य आलारकालाम और श्रमण आचार्य उद्दक रामपुत्र के प्रति असीम कृतज्ञता का भाव जागा, जिनसे उन्होंने क्रमशः सातवां और आठवां ध्यान सीखा था। वे दोनों अवश्य योग्य पात्र हैं। तब असीम कृतज्ञता के भावों से अभिभावित होकर यह निर्णय किया कि वे दोनों योग्य पात्र ही नहीं हैं बल्कि उन दोनों श्रमण आचार्यों ने ही सही आध्यात्मिक साधना सिखायी थी। बोधिसत्त्व अवस्था में वे अन्य किसी भी परंपरा के साधनापथ पर जरा-भी नहीं भटके। (दुष्करचर्या अवश्य की, परंतु किसी साधनापथ पर नहीं भटके।) परंतु जब ध्यान करके देखा कि वे दोनों अब कहां हैं, तब पाया कि उन दोनों का शरीरांत हो चुका है और वे दोनों अरूप ब्रह्मलोक में जन्म ले चुके हैं। अरूप ब्रह्मलोकों में भौतिक काया का सर्वथा अभाव होता है। इसीलिए वे अरूपलोक कहलाते हैं, रूपलोक नहीं। उन दिनों रूप कहते थे भौतिकता को। स्वर्गलोकों में रूप सूक्ष्म और वायव्य होता है। ब्रह्मलोकों में रूप और अधिक सूक्ष्म हो जाता है। लेकिन अरूप ब्रह्मलोकों में कायिक रूप का अस्तित्व ही नहीं रहता। विपश्यना के लिए रूप और नाम (शरीर और चित्त) दोनों की आवश्यकता होती है। अतः वहां विपश्यना नहीं सिखायी जा सकती।

फिर चिंतन किया कि अध्यात्म की इस यात्रा में उन्हें अन्य किसने सहायता की? तब मन में वे पांच ब्राह्मण साथी याद आये, जो कि यद्यपि उसे अंत में छोड़ कर चले गये थे, तब भी छह वर्षों तक उनके साथ तप में जुटे रहे और उनकी सेवा-चाकरी भी करते रहे। छोड़ कर चले गये, इसका बुरा नहीं माना। परंतु इसके पूर्व साथ दिया और सेवा की, उसे महत्त्व दिया।

उनका ध्यान किया तो पाया कि वे ऋषिपत्तन मृगदाव वन (आज के सारनाथ) में ठहरे हुए हैं। तब कृतज्ञताविभोर हो अत्यंत करुणचित्त से उन्हें विपश्यना से लाभान्वित करने के लिए सारनाथ (वाराणसी) की ओर चल पड़े। सचमुच निःस्वार्थ सेवा और कृतज्ञता – ये दोनों सद्गुण दुर्लभ हैं।

विपश्यना इन दोनों सद्गुणों में परिपुष्ट होने में मदद करती है। इन दोनों सद्गुणों में असीम मंगल समाया हुआ है।

मंगल मित्र,
सत्यनारायण गोयन्का

(आत्म कथन)

मेरे पूर्वज

मेरे ताऊजी अपने तीन भाइयों में सबसे बड़े थे। पिताजी गोपीरामजी सबसे छोटे थे। दोनों की उम्र में लगभग १५ वर्ष का अंतर था। ताऊजी द्वारकादासजी अपने अनुज गोपीराम को पुत्रवत प्यार करते थे और उन्हें गोप्या कह कर पुकारते थे। जब परिवार का व्यापार बढ़ा तब मांडले के मारवाड़ी रोड की छोटी दूकान छोड़ कर एक बड़ी दूकान ले ली। उन दिनों व्यापारी प्रतिष्ठान अपनी दूकान के नाम से जाना जाता था। ताऊजी ने बड़ी दूकान का नाम "गोप्याबाबू टाई" रखा। टाई कहते हैं भवन को। उनकी दूकान और व्यवसाय का यह नाम मांडले और उत्तरी बर्मा में बहुत प्रसिद्ध हुआ और जापानी युद्ध के आरंभ तक प्रसिद्ध ही रहा, जब तक कि युद्ध में वह दूकान नष्ट नहीं हो गयी।

मेरे पूर्वजों का कपड़े का व्यापार बहुत कष्टसाध्य था। रंगून से पेटियों तथा गांठों में थोक माल खरीद कर लाते और उसे दूकान में खोल कर थानों में ही थोक बेचते। हमारी दूकान के लगभग सभी व्यापारी मांडले से लेकर मचीने तक के बड़े गांवों और नगरों के दुकानदार होते थे। हमारे यहां नकद का धंधा नहीं था। सभी व्यापारी उधार माल ले जाते थे और उनमें से कुछ दुबारा खरीद

करने आते तब पुराना उधार चुका कर और नया माल खरीद कर ले जाते। परंतु अधिकांश व्यापारियों से पुरानी उगाही वसूल करने और उनसे नये माल का ऑर्डर लेने के लिए ताऊजी द्वारकादासजी लगभग हर महीने १०-१५ दिनों के लिए इन जंगलों की यात्रा करते थे। उन दिनों गांव तो गांव, उत्तरी बर्मा के छोटे-मोटे नगरों को भी जंगल ही कहते थे।

हमारे सारे परिवार की भांति ताऊजी बहुत कट्टर सनातनी हिंदू थे। अतः किसी बरमे या चीने के हाथ का भोजन करना तो दूर, उनका छूआ पानी तक नहीं पीते थे। अतः यात्रा पर निकलते समय अपने साथ दस-पंद्रह दिन की पूरियां और आलू का सूखा साग तथा अचार एक कटोरदान में साथ लेकर चलते थे। सारी यात्रा के दौरान यही उनका आहार होता था। पीने का पानी स्वयं किसी कूंए से निकालते थे। उनकी राजस्थानी पगड़ी पतली और लंबी होती थी। उसके एक सिरे पर अपने साथ लाया लोटा बांध कर, पगड़ी का रस्सी जैसा उपयोग करके कूंए से पानी निकालते और पीते थे। रात किसी भिक्षु के विहार में बिताते थे। यों वर्षों कष्ट सह-सह कर यात्रा करते हुए उन्होंने अपने शरीर को रोगी बना लिया था।

जब कोई कहता कि मेरे पिता को उस यात्रा पर जाना चाहिए तब वे कड़ा विरोध करते कि "गोप्या अभी टाबर है। जंगल की यात्रा के लायक नहीं है।"

पिताजी को वे अधिक से अधिक मेम्यो की व्यापारिक यात्रा पर भेजते थे जो कि सरल ही नहीं, आनंददायक भी होती थी। सुबह जाकर शाम को घर लौट आते। मेम्यो बहुत सुहानी हिल स्टेशन थी। वहां की यात्रा में क्या कठिनाई होती भला?

दोनों ओर प्यार पलता है। जैसे ताऊजी अपने अनुज के प्रति प्यार और करुणा से भरे रहते थे, वैसे ही पिताजी भी अपने अग्रज के प्रति स्नेह-सम्मान से भरे रहते थे। मुझे एक घटना अब भी खूब याद है। ताऊजी का मसों (भगंदर) का रोग बहुत बढ़ गया था। मधुमेह का रोग तो था ही। एक नौसिखिये डॉक्टर ने उनके मसों का ऑपरेशन किया। इससे जो खून बहने लगा वह रुकने का नाम नहीं लेता था। ताऊजी का जीवन खतरे में था। पिताजी बड़े कठोर हृदय थे। परंतु उस दिन मैंने देखा कि वे बालकों की भांति हू-हू करके रोने लगे। दूसरा सीनियर डॉक्टर बुलाया गया। उसने खून का बहना रोका। ताऊजी की जान बची। पिताजी के चेहरे पर खुशियां लौट आईं।

राधेश्याम

अपने भाई के प्रति उनकी श्रद्धा और सम्मान अनुपम था। जब ताऊजी को एक-के-बाद-एक सात पुत्रियां प्राप्त हुईं और पुत्र-प्राप्ति की कामना पूरी नहीं हो रही थी, तब पिताजी को चिंता हुई कि बड़े भाई का वंश कैसे चलेगा? उनकी मृत्यु पर उन्हें पानी कौन देगा? इस चिंता के मारे मुझे उन्हें गोद दे दिया। बिना मन के पिता-आज्ञा मान कर मैंने उनका निर्णय स्वीकार कर लिया। परंतु गोद लेने के डेढ़ वर्ष के बाद ही उन्हें राधेश्याम के रूप में पुत्र प्राप्त हुआ। यह देख मैं पुनः अपनी मां के गोद में जाने के लिए मचल उठा, यह कह कर कि अब ताऊजी पुत्रहीन नहीं रहे। तब पिताजी ने बहुत दृढ़तापूर्वक मुझे डांटा। अपने भाई के प्रति असीम प्यार और सम्मान प्रकट करते हुए उन्होंने मुझे समझाया कि ताऊजी का स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा है। न जाने कब चल बसें। तब ताईजी और उनकी छोटी-छोटी संतानों की देखभाल कौन करेगा? अपने अग्रज के प्रति उनकी जिम्मेदारी का भाव असीम था। मुझे उनकी इच्छा के प्रति झुकना पड़ा।

बालकृष्ण

पिताजी के एक और बड़े भाई थे श्री रामेश्वरजी, मेरे मझले ताऊजी। उनके संतान थी ही नहीं। अतः पिताजी ने उनको अपना बड़ा पुत्र बालकृष्ण गोद दे दिया ताकि उनका भी वंश चले और मरणोपरांत उन्हें पानी देने वाला पुत्र भी हो।

गौरीशंकर

उनके हृदय में जितना सम्मान का भाव अपने बड़े भाई द्वारकादासजी और रामेश्वरजी के प्रति था, उतना ही चचेरे भाई गणपतरायजी के प्रति भी था। वे विधुर थे। उनके भी कोई पुत्र नहीं था। उनका भी वंश कैसे चलेगा? उनको पानी कौन देगा? इस चिंता से व्याकुल हो कर मेरे अनुज गौरीशंकर को उन्हें गोद दे दिया। ताऊजी गणपतरायजी धनी नहीं थे। वे हमारी दूकान में प्रमुख सेल्समैन के रूप में नौकरी करते थे। माताजी को अपने लाडले पुत्र के भविष्य की चिंता बनी रहती थी, यह सोच कर कि गौरीशंकर की आर्थिक हालत कमजोर बनी रहेगी। फिर भी पिताजी निश्चिंत थे। उन्हें अपने सभी पुत्रों पर भरोसा था कि वे गौरीशंकर को धनहीन नहीं रहने देंगे।

जापानी युद्ध के बाद जब हम सब बर्मा लौटे तब वहां पुनः अच्छा खासा व्यापार जमा लिया। गौरीशंकर वहीं किसी भारतीय हाईस्कूल में पढ़ता था। रंगून के मारवाड़ी समाज के प्रमुख और प्रसिद्ध व्यापारी थे – श्री शोभारामजी। उनकी एक विवाह योग्य कन्या थी – सीता। वे उसके लिए कोई योग्य वर ढूंढ रहे थे। उनकी नजर गौरीशंकर पर टिकी। गौर वर्ण, सुंदर सलोना स्वरूप और अत्यंत मृदुभाषी मेरा अनुज उन्हें बहुत पसंद आया। परंतु उन्होंने उसके बारे में छानबीन की कि वह हमारे परिवार की फर्मों में भागीदार है या नहीं? चूंकि वह ताऊजी गणपतरायजी को गोद गया था और गणपतरायजी सारी उम्र हमारे पैतृक फर्म में नौकरी करते रहे और अब अत्यंत वृद्ध हो चुके थे। ऐसी अवस्था में यह जानना जरूरी था कि क्या वे हमारे नए व्यापारिक प्रतिष्ठानों में भी नौकरी ही करते हैं? अतः शोभारामजी जानना चाहते थे कि गौरीशंकर की हमारे व्यापार में क्या स्थिति है? उन्होंने बड़े संकोच के साथ पिताजी से सच्चाई जाननी चाही। पिताजी ने दृढ़तापूर्वक जवाब दिया कि जैसे बालकृष्ण, बाबूलाल और सत्यनारायण, तीनों बेटे यहां के व्यापार में बराबर के हिस्सेदार हैं, वैसे ही चौथा बराबर का भागीदार गौरीशंकर भी है। यानी हमारे व्यापार-धंधे में गौरीशंकर एक चौथाई का भागीदार है। शोभारामजी को यह सुन कर बड़ा सुखद आश्चर्य हुआ। परंतु फिर घर जाकर सोच में पड़ गये कि जिसकी अभी मूंछें भी नहीं निकली हैं उस अनुभवहीन नवयुवक को बिना कोई पूंजी लगाये बराबर का भागीदार मान लिया जाना, यह पिता का निर्णय भले हो, परंतु इसके बड़े भाई इस निर्णय को कैसे स्वीकार करेंगे?

यह सोच कर इस संबंध में मेरे विचार जानने के लिए वह मेरे

पास आये। मुझे जब पिताजी का मंतव्य सुनाया तो मैंने पूछा यह निर्णय किसका है? उन्होंने कहा – "आपके पिताजी का।"

तब मैंने दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया – "जब पिताजी का निर्णय है तब मुझसे पूछने क्यों आये?

हमारे यहां पिता सर्वोपरि होता है। उसका निर्णय सर्वमान्य होता है।"

यह सुन कर शोभारामजी लौट गये। परंतु उनको यह अस्वाभाविक लगा। उन्होंने कहा कुछ नहीं। सगाई भी नहीं हुई। दूसरे दिन फिर आये और मुझसे वार्तालाप करने लगे। उन्होंने कहा – "देखिये, आपके एक छोटा दत्तक भाई राधेश्याम है। आपकी भागीदारी में उसका आधा हिस्सा है। इसका अर्थ यह हुआ कि आपका हिस्सा चार आना नहीं, दो आना रहा। और गौरीशंकर अनुभवहीन है। उसके पास व्यापार में लगाने के लिए कोई बड़ी पूंजी भी नहीं है। ऐसी हालत में इतने बड़े व्यापार में आपकी दो आने की भागीदारी और गौरीशंकर की चार आने की। यह कैसे संभव होगा?"

मैंने फिर दृढ़ स्वर में कहा – "जब यह पिता का निर्णय है तब हमारे यहां उनका ही निर्णय सर्वोपरि है। आपकी चिंता व्यर्थ है।"

और दूसरे दिन गौरीशंकर और सीता की सगाई हो गयी और शीघ्र ही विवाह भी हो गया। गौरीशंकर हमारे बर्मा के व्यापारिक प्रतिष्ठानों में सदा के लिए चार आने का ही भागीदार बना रहा और मैं दो आने का।

ऐसे अवसर पर यदि मैं अपने भीतर मानवता के स्थान पर पशुता जगाता तो मूर्खतावश यही कहता कि पिताजी चाहे जो निर्णय करें, मैं अपना चार आने का हिस्सा कम नहीं होने दूंगा। परंतु मैंने ऐसा नहीं किया। मेरे अग्रज बालकृष्ण और बाबूलाल ने भी पिताजी का निर्णय सहर्ष स्वीकार किया।

परिणामस्वरूप हमारी पारिवारिक परंपरा की जीत हुई। पिताजी के उचित निर्णय की जीत हुई। उनके गौरव की जीत हुई। संयुक्त परिवार के गृहस्थ धर्म की मर्यादा की जीत हुई। सत्य की जीत हुई। धर्म की जीत हुई। मेरी प्रसन्नता की जीत हुई। ।

जून १९६९ में मैं बरमा से भारत आया। आते ही पूज्य गुरुदेव के आदेशानुसार धर्म की सेवा में लग गया। विपश्यना के शिविर लगाने में लग गया। भारत के पारिवारिक व्यापार धंधे में एक दिन भी नहीं बैठा। तिस पर भी लगभग दस वर्ष पश्चात जब पारिवारिक व्यापार धंधे और चल-अचल संपत्ति का बटवारा हुआ तो बड़े भाई बालकृष्ण और बाबूलाल ने मुझे अपने बराबर का हिस्सा दिया। पुनः परिवार के आदर्श की जीत हुई। हम धन्य हुए! ।

बालकृष्ण और बाबूलाल दोनों बड़े भाइयों ने बिना किसी बाधा के मुझे निरंतर धर्मसेवा में लगे रहने का अमूल्य अवसर प्रदान किया। मैं कृतज्ञताविभोर हुआ। इन दोनों भाइयों ने बरमा में परम पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन से विपश्यना सीखी थी। अब भारत में कुछ एक और शिविरों में सम्मिलित होने पर उन्हें विपश्यना सिखाने योग्य परिपक्व अवस्था में पहुँचने के लिए उनकी भरपूर धर्मसेवा की। मैं ऋणमुक्त हुआ। इन दोनों अग्रजों को आचार्य की धर्मगद्दी पर बैठ कर साधकों को विपश्यना सिखाते देख कर मन प्रसन्नता से भर-भर उठता।

धर्म पथिक,
सत्यनारायण गोयन्का

आवश्यकता है।

(१) **"धम्मपफुल्ल":** अलूर, बैंगलोर, के विपश्यना केंद्र में स्थायी रूप से काम करने वाले धम्मसेवक तथा **व्यवस्थापक** (**मैनेजर**) की आवश्यकता है। उचित मानधन दिया जायगा। उम्र ३० से वर्ष अधिक होनी चाहिए। **संपर्कः** १) विपश्यना साधना एवं शोध केंद्र (कार्यालय), १८५, १ ला माला, ४था क्रास, लालबाग रोड, बैंगलोर-५६००२७, (कर्नाटक) फोनः (०८०) २२२२४३३०. E-mail: info@paphulla.dhamma.org

(२) इसी प्रकार **"धम्मसिन्धु":** ग्राम- बाड़ा, मांडवी-कच्छ, के केंद्र के लिए भी। उम्र ३० से ५० वर्ष के बीच हो। **संपर्क –** फोनः **भुज – (०२८३२)** २५५२१८, २५१७५४, **गांधीधाम– (०२८३६)** २२३६५४, २२०१४१, **मांडवी – (०२८३४)** २२४१९८, २२३११८. E-mail: info@sindhu.dhamma.org

विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरि पर

पालि प्रशिक्षण

'वर्ष २००७-२००८ के लिए विज्ञप्ति'

एक महीने का सघन पालि-हिंदी प्रारंभिक पाठ्यक्रम

यह पाठ्यक्रम वर्ष २००५ में प्रारंभ हुआ था। इस वर्ष इसका तीसरा सत्र है। यह सत्र **४ दिसंबर २००७ (सुबह) से १ जनवरी २००८ (सुबह)** तक बिना किसी अवकाश के चलेगा।

आवेदन-पत्र जमा करने की **अंतिम तिथि १५ अक्तूबर २००७** है।

प्रवेश योग्यताएं –

ए) योग्यताएं – वे साधक जिन्होंने (१) पांच दस दिवसीय विपश्यना शिविर, तथा (२) एक सतिपट्ठान शिविर, किये हों (३) पंचशील का पालन करते हुए, (४) दो वर्ष से प्रतिदिन दो घंटे की नियमित साधना करते हों एवं (५) विद्या के प्रति समर्पित हों। बीस दिवसीय शिविर किये हुए साधक को वरीयता दी जायगी।

इस पाठ्यक्रम के पंजीकरण हेतु क्षेत्रीय आचार्य की अनुमति होनी आवश्यक है।

बी) शैक्षणिक योग्यता – १२ वीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए। स्नातक को वरीयता दी जायगी।

पाठ्यक्रम के लिए लगभग चौबीस (१२ पुरुष एवं १२ महिला) विद्यार्थियों का पंजीकरण किया जायगा।

एक महीने का सघन पालि-हिंदी उच्च पाठ्यक्रम

यह पाठ्यक्रम वर्ष २००६ में पहली बार प्रारंभ किया गया था। इस वर्ष इसका द्वितीय सत्र है। इस वर्ष यह पाठ्यक्रम **२ जनवरी २००८ (सुबह) से ३० जनवरी २००८ (सुबह)** तक बिना अवकाश के चलेगा

आवेदन-पत्र जमा करने की **अंतिम तिथि १५ अक्तूबर २००७** है।

प्रवेश योग्यताएं –

ए) योग्यताएं- ➲ इस पाठ्यक्रम के लिए उपरोक्त योग्यताओं के साथ व्ही. आर. आई. द्वारा आयोजित एक महीने का सघन पालि-हिंदी **प्रारंभिक पाठ्यक्रम** पूरा किया होना अनिवार्य है। उन विपश्यी साधकों को जिन्हें पालि का प्रारंभिक ज्ञान है तथा जिनके पास बाकी योग्यताएं हैं, उनके आवेदन पत्र पर भी विचार किया जायगा।

➲ इस पाठ्यक्रम के पंजीकरण हेतु क्षेत्रीय आचार्य की अनुमति होनी आवश्यक है।

बी) शैक्षणिक योग्यता- ➲ १२ वीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए। स्नातक को वरीयता दी जायगी।

पाठ्यक्रम के लिए लगभग चौबीस (१२ पुरुष एवं १२ महिला) विद्यार्थियों का पंजीकरण किया जायगा।

इनके लिए आवेदन-पत्र कृपया **विपश्यना विशोधन विन्यास,** धम्मगिरि, इगतपुरी से प्राप्त कर सकते हैं।

Postal Regn. No. LII/REN./RNP-46/2006-08

Postal Licence No. LII/RNP-WPP-03

धम्मपत्तन केंद्र में प्रथम विपश्यना शिविर

धम्मपत्तन विपश्यना केंद्र, गोराईगांव में पहला विपश्यना शिविर आगामी शरद पूर्णिमा दि. २५ अक्तूबर, गुरुवार की सायं से आरंभ होकर ४ नवंबर, रविवार की प्रातः तक लगना निश्चित हुआ है। यथासंभव केवल पके हुए पुराने विपश्यी साधक-साधिकाएं ही भाग ले सकेंगे। साधकों को विपश्यना स्तूप में संनिधानित भगवान बुद्ध के पावन अस्थि-अवशेषों के सान्निध्य का लाभ मिल सकेगा।

पूज्य गुरुदेव श्री गोयन्काजी और माताजी भी इस शिविर में पूरे समय उपस्थित रहेंगे।

इसमें स्थान बहुत सीमित है। अपना स्थान यथाशीघ्र सुरक्षित कराने के लिए **संपर्क** करें – श्री राम प्रताप यादव, द्वारा- गोयन्का हाऊस, 'शुभदा', प्लाट नं. ७६, ९वां सर्कुलर रोड, हतकेश सोसायटी, जुहू स्कीम, विलेपारले (प.) मुंबई-४०००४९. फोन- २६१०५४०३, २६१६२८३७ या मो. ९३२६८९३६५१. (स्वीकृति प्राप्त होने पर ही आने का प्रयास करें।)
ईमेल- yadavdg@gmail.com; Website: www.globalpagoda.org

नये उत्तरदायित्व

आचार्य

1. U Thein Aung, *Myanmar*
   To serve courses for bhikkhus in Myanmar

नव नियुक्तियां

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. Mr. Shirendev Dorlig, *Mongolia*
2. Ms. Angela Davis, *U.K.*

सहायक आचार्य

१. रामस्वरूप भारती, गुना, म.प्र.

बाल-शिविर शिक्षक

१. श्रीमती सी. माधवी के. रेड्डी, हैदराबाद
2. Mrs. Su-Ling Lin, *Taiwan*

दोहे धर्म के

सतसंगत मंगलकरण, सतसंगत सुख-मूल।
सतसंगत जागे धरम, उखड़े पाप समूल॥

मात-पिता की वंदना, गुरुजन का सत्कार।
समता होवे मित्र से, पत्नी से हो प्यार।

परिजन का पालन करे, करे दान उन्मुक्त।
सदा मुक्त ऋण से रहे, पावे सुख उपयुक्त॥

सद्गृहस्थ की संपदा, जन हितकारी होय।
कर दे दूर विपन्नता, मंगलकारी होय॥

हिंसा चोरी झूठ तज, गृहपति! तज व्यभिचार।
साध आंतरिक शांति सुख, कुशल लोक व्यवहार॥

मिथ्या यश निंदा सुने, अविचल निर्भय होय।
डिगे नहीं सत्पंथ से, गृहपति सुखिया होय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा.) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

सज्जन री संगत मिलै, मिलै पंथ अणमोल।
मिनख जमारो सुधरज्या, सुफळ हुवै या खोळ॥

घर गिरस्त री जिंदगी, बणज्या सुख री खाण।
प्यार परस्पर जदि रवै, रवै मान सम्मान॥

घर गिरस्त री जिंदगी, बणज्या नरक समान।
जदि जागै मन कुटिलता, द्वेस द्रोह अभिमान॥

निज-संपद संतोस रख, मत पर-संपद देख।
सदा सुखी सद्गिरस्त री, या ही रीति अलेख॥

मत कोई रो मार हक, मत पर-संपद दाब।
पर-संपद स्यूं चालसी, कै दिन आब रुआब?

रोतो-धोतो ही रवै, मन ना हुवै असोक।
ना तो सुधरै लोक ही, ना सुधरै परलोक॥

आकांक्षा इंटरप्राईसेस
ई - 1/82, अरेरा कालोनी, भोपाल (म. प्र.) - 462016
फोन: (0755) 2461243, 2462351; फैक्स: (0755) 2468197
Email: aeent@airtelbroadband.in
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422007. **बुद्धवर्ष 2551, भाद्रपद पूर्णिमा,** 26 **सितंबर, 2007**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71.** Regn. No. **LII/REN/RNP-46/2006-08**

Licenced to post w**ithout Prepayment of postage** -- Licence number-- LII/RNP-WPP-03
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086
फैक्स : (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org